भविष्य का भाग्य

उपन्यास

10/10/2012

Dr R L Prasad & Mrs S K Prasad

Dr Ram L Prasad

&

Mrs Saroj K Prasad

भविष्य का भाग्य

डाक्टर राम लखन प्रसाद

और

श्रीमती सरोज कुमारी प्रसाद

की एक और कल्पित रचना

Online Publication Google Drive

https://docs.google.com/open?id=0B_ft1xiaA7UgLXNaYldiYzM3Q0U

List of Our Publications

by Dr Ram Lakhan Prasad & Mrs Saroj K Prasad

- *History and Development of Education in Fiji*
- *Fiji Teachers' Journals*
- *English Teachers' Journals*
- *Fiji Education*
- *Link Texts for Fiji Form 1 to 4 Students*
- *Job Evaluation Study Report*
- *Motivation Towards 2000*
- *Selling Tactfully*
- *Education for New Fiji*
- *A Collection of Lectures to Youth and Adult Groups*
- *Story of an Indentured Immigrant- Basti to Botini*
- *Bhavnawon se Bharpur Rachnayen- A Collection of Short Stories and Poems*
- *Pyar Ka Bandhan – Another Collection of Short Stories, Poems and other Articles*
- *Khamoshi – A Hindi Novel*
- *Pyar Ke Rang Anek – Another Novel*
- *Takdeer Ki Lakeer- A Short Story*
- *Ujale Ki Pari Andhere Ki Kali – Another Novel*
- *A Review of Ramayan*
- *Hinduism Needs A Change*
- *Our reflections*
- *Our Sweet and Sour Memories- Another Novel*
- *Shairees*

रोशनी के लिये इस दुनियां मे कहीं न कहीं तो उपयुक्त स्थान मिलेगी !

एक अनाथ लड़की के लिये जगह कहाँ मिलेगा ?

वह घर कहां है जहां रोशनी को प्यार, इजज़त और सम्मान मिलेगा ?

वह कौन जगह है जहां रोशनी के निजी अरमानों को ठीक से समझा जायेगा ?

ऐसी जगह, ऐसा स्थान और इस तरह का घर आंगन कहीं तो होगा ?

वह कौन नेक इनसान है जो रोशनी को सही पनाह दे सकेगा ?

कौन ? कहां ? कब ?

हे भगवान ! कया मैं कभी भी अपनी सभी कामो को समय पर कर पाऊँगी ?

नयना यही सोच रही थी जब उस ने अपने दुकान का दरवाजा खोलने के लिये अपने चाभियों के गुच्छे को अपने हांथ मे लिये दुकान के बाहर खडी थी । नयना को इस छोटे से व्यापार को तब खोलना पड़ा था जब उस के पति नरेश प्रसाद का अचानक देहांत दो वर्ष पहले हो गई थी । नरेश को *हीमोफीलिया* थी जिस से थोड़े से चोट से उस के खून बड़े जोर तोड़ से बहने लगने का डर रहता था । नयना इसी तरह के एक हादसे की शिकार बन गई थी जिस के जरिये उस के पति नरेश की मृत्यू हो गई थी ।

नयना बत्तीस वर्ष के उम्र मे ही विधवा हो गई थी और उस के पति के लम्बे बिमारी के बाद की अचानक मृत्यू ने उसे बहुत ही बड़े आर्थिक दलदल मे फंसा दिया था जिस मे से वह निकलने की भरशक्त कोशिश करती रही । उस के मदद के लिये न ही कोई बीमा थी और न ही कोई परिवारिक लोग उस की सेवा के लिये उस समय हांथ बढ़ाये थे । वह अकेल अपने छोटी बच्ची रोशनी के भविष्य बनाने के लिये अपने छोटे से मकान मे रहती थी ।

नयना तो पहले से ही अनाथआश्रम मे पली थी पर नरेश के माता पिता के मौत के बाद उन के सभी मिलकियत को उस के काका हरी प्रसाद देखभाल करने लगे थे। नरेश की दो बहने थी। सुरेखा, जिस की शादी हो जाने पर वह अपने पति प्रवीन के साथ दूसरे शहर मे रहने चली गई थी। शीला, जो महेन के साथ विवाह कर के वहीं बगल के गांव मे रहने लगी थी।

सुरेखा तो बचपन से ही नरेश से जलन भाव करती रही यह सोच कर की उस के मांता पिता नरेश की पक्षपात किया करते थे और शीला भी शायद इसी कारण से कभी नरेश के नज़दीकी रिशता नही बना पाई थी। अकसर ऐसे भावनाये उत्पन हो जाते हैं जब एक हंसते खेलते परिवार के मुखियों की अन्त हो जाती है।

अब नयना के पास एक पुरानी मोटर थी और घर भी बेंक के नीचे गिरवी रख्खी थी। हां कुछ थोड़े से पैसे जो नरेश के प्रोविडेन्ट फण्ड से मिले थे उस को नयना ने अपने बेंक मे रोशनी के भविष्य के भाग्य को उज्ज्वल बनाने के लिये जमा कर दिये थे। हलांकि नयना यूनिवेरिटी ग्रेजुवट थी पर अपने विवाहित जीवन मे अपने पति के राज मे उस को नौकरी करने की जरूरत ही नहीं पड़ी थी कयोंकि नरेश कोलेज का प्रोफेसर था। पर अपने बेटी रोशनी के पालन

पोषन करने के लिये नयना को यह छोटी सी फूलों को बेचने वाली दूकान खोलनी पड़ी थी जब उस के पति गुजर गये थे ।

दुकान के अन्दर जा कर नयना ने सभी दरवाजे के नीचे से डाली गई चिटठी पत्रियों को उठाया और उन की ठीक से निरक्षण किया । सभी बिलों को एक फाइल मे रख कर सब नये ओडरों को तैयार करने मे जुट गई । नयना को अपने सभी ग्राहकों से बहुत लगाव हो गया था और वह बड़े शौक से उन के सभी ओडरो को समय पर पूरा कर देती थी इसीलिये उस का यह छोटा सा व्यापार शहर मे बहुत विख्यात हो चला था ।

पर आजकल न जाने कयों वह बहुत थकान का महसूस करने लगी थी और अपने कामों मे कुछ ढीलापन देखने लगी थी । इतना होने पर भी आज शाम होते होते उस ने सबी ग्राहको के ओडरों को पूरा करने मे समर्थ हो गई थी ।

उस ने सोचा कि जो कुछ षेश बचे थे उन को वह ग्राहको के घर दे कर अपने डाकटर के पास हो कर तब अपने बेटी रोशनी को स्कूल से लेकर उस को उस के नृत्य कला के क्लास मे छोड़ कर घर चली जायेगी । शाम का भोजन बनाने के बाद वह रोशनी को फिर घर ले आयेगी ।

अपना दुकान बन्द कर के वह अपने निर्धारित राह पर चल पड़ी । डाकटर शलेन्द की सेजरी वहीं बगल वाली गली मे थी इसलिये नयना को अपने सभी बचे ओडरो को उन के घरों तक पहुँचा कर वहां पहुँचने मे कुछ देर नहीं लगी ।

डाकटर शलेन्द एक लम्बा चौड़ा बलवान नौजवान था जिस के घुँघराले बाल थे और बहुत ही भावुक आंखों पर वजनदार चसमा चढ़ा हुआ था । वह इस प्रसाद परिवार का देखभाल कई वर्षों से कर रहा था । नयना के पति नरेश और शलेन्द अपने कोलेज के दिनो के एक ही कमरे के सहपाठी थे । अपने पढ़ाई खतम करने के बाद शलेन्द डाकटरी पेशे को अपना लिया और नरेश अध्यापन करने लगा था लेकिन वे एक दूसरे के नजदीकी दोस्त बने रहे ।

नयना और शलेन्द भी कोलेज के दिनों एक दूसरे के बहुत करीब आ चुके थे पर इत्फाक से नयना नरेश के जीवन मे कदम रख लिया और शलेन्द ने अपने प्यार का इज़हार ही कभी नहीं कर पाया था । शायद इसी लिये आज भी वह एक वरणीय कुँवारा रह गया था ।

उस ने कभी किसी अन्य लड़की को अपने योग्य ही नहीं समझ पाया था । शायद सच्चे प्यार मे ऐसा ही दम होता है । शायद इसी लिये आज भी शलेन्द पंकज उदहास की वह गज़ल को अकसर गुनगनाया करता है ।

पत्थर कहा गया कभी शीशा कहा गया, दिल जैसे एक चीज़ को कया कया कहा गया ।

नयना की भलिभांति जांच पड़ताल करने के बाद डाक्टर शलेन्द ने उस की खून की जांच कराने को कहा और फिर कई सवाल करता रहा । नयना ने बताया कि आजकल उस को बहुत थकान लगती है, उस के कुछ वजन भी कम हो गये हैं, उसे रातों को नीन्द भी अच्छे से नहीं लगती है और वह अचानक जाग जाती है जब उस का बदन पसीने से तर बतर हो जाता है । उस के पेट मे कभी कभी तनाव सी होती है ।

पहले तो डाक्टर शलेन्द ने सोचा कि नयना के यह सब लक्षन उस के पति के देहांत के सोच और वियोग से होता होगा पर फिर भी उस ने आगे जांच करवाने के लिये उस से *एकसरे*, *सकेन* और *अल्ट्रा साउन्ड* करवाने की मांग की जिस से नयना जरा चकित हो गई लेकिन डाक्टर शलेन्द ने उसे समझाया कि उन को सपष्टता की जरूरी है जिस से बाद मे कभी उन को पछताना न पड़े ।

डाकटर शलेन्द ने नयना को यह भी बताया कि उसे अपने काम की गतिविधि को कम और पुनर्निमाण करने की जरूरत है । अपने दुकान को एक घण्टे बाद मे खोलो और फिर एक घण्टे पहले ही बन्द कर दो जिस से तुम को

रोशनी के देखभाल के लिये और भी समय मिल सके। उस ने नयना को बिदा करते हुये एक हफ्ते मे फिर देखने का वादा किया और नयना अपने घर जाने को तैयार हो गई।

जाते जाते शलेन्द ने नयना से वह सवाल कर ही दिया जो उसे वर्षों पहले करना चाहिये था, "नयना, कया तुम्हारे पास अपने पुराने दोस्त के साथ भोजन करने का कुछ भी समय निकल सकता है ?"

"शलेन्द, इस सवाल का जवाब शायद अभी मैं नहीं दे पाऊँगी। अभी इस बारे मे सोचना शायद जल्द बाजी होगी , हम फिर कभी बाद मे इस के बारे मे सोचेंगे।" यह कह कर नयना शलेन्द के सेजरी के बाहर निकल गई।

पूरे सप्ताह भर नयना अपने रोजीना कार्य मे व्यस्त रही पर उसे अपने स्वास्थ के लिये जो जांच पड़ताल की गई थी उस के लिये फिकर लगी रही। किसी तरह से सप्ताह बीत गया। उस दिन सुबह को नयना ने रोशनी को स्कूल छोड़ कर आज फिर डाक्टर शलेन्द के चिकित्सालय मे पुनः बैठी थी। आज वह बड़े उत्सुकता पूर्वक अपने सभी स्वास्थ सम्बन्धी जांच की खबर सुनने के लिये तैयार थी। लेकिन डाक्टर शलेन्द खामोश उन रिपोटों को पढ़ रहा था।

"नयना, मैं यह कह सकता हूँ कि कभी कभी ऐसे मामलों मे दूसरे तज़बीज या मत की जरूरत पड़ जाती है इसलिये मैं चाहता हूँ कि तुम एक बहुत ही माहिर रोगक्षमताविज्ञानी विशेष्ज्ञ के पास अपना विस्त्रित *हैच आई वी* की जांच कराने के लिये जाओ," डाक्टर शलेन्द ने बड़े सावधानी से नयना को समझाने की कोशिश की पर नयना इतनी उतावला थी कि वह पूरे रिर्पोट के बारे मे बिस्तार पूर्वक जानना चाहती थी।

"नयना, इन प्रारंभिक जांच से यह पता चलता है कि तुम *हैच आई वी* की शिकार हो सकती हो," डाक्टर शलेन्द ने कहना शुरू किया ही था कि नयना चीख उठी, " *हैच आई वी* ! और मुझे ? तुम सोचते हो कि मैं ने नरेश के मौत के बाद कोई ऐसे आदमी के साथ सम्बन्ध जोड़ रखी थी जिस को यह बिमारी थी ? तुम ऐसा सोच भी कैसे सकते हो ?"

"नयना, मैं कोई भी ऐसी वैसी बात नहीं कह रहा हूँ।" डाक्टर शलेन्द ने अपनी सफाई देने की कोशिश की पर नयना ने फिर अपने आंसुओं को पोंछते हुये पूछा, "तब तुम मुझ पर ऐसा घिनौनी आरोप कैसे लगा सकते हो ?"

"नयना, मेरी प्यारी नयना, मैं भी यही सोच रहा हूँ कि यह सब संकेत झूठ हो जाये पर तुम्हारे सभी लक्षन और

प्रारंभिक जांच तो यही संकेत देती है और मैं तुम्हारा डाक्टर होने के नाते तुम्हारी पूरी तरह से देख भाल करना चाहता हूँ। इसलिये मुझे तुम को डाक्टर गिलेसपी के पास भेजना बहुत ही जरूरी है।" डाक्टर शलेन्द ने नयना को समझाने की कोशिश जारी रखा।

" यह बात को ठीक से समझ लो शलेन्द कि मैं ने नरेश के मौत के बाद कुछ भी ऐसी हरकतों को नहीं किया है जिस से मुझे *हैच आई वी* हो सकती है।" नयना ने कहा पर शलेन्द ने पूछा, "और उस से पहले ?"

"तुम यह सोचते हो कि मैं एक विश्वासघाती पत्नी थी ?" नयना गरज पड़ी।

" हो सकता है कि तुम्हे नरेश से ही *हैच आई वी* मिली हो।" शलेन्द ने कहा।

" अब तुम कया नरेश को भी विश्वासघाती पती कहना चाहते हो।" नयना ने कहा और जोर जोर से रोने लगी।

अब तक डाक्टर शलेन्द अपना धर्य खो बैठा था इसलिये वह अपने कुर्सी से उठा और नयना के पास जा कर उस

का हांथ पकड़ कर पूछा, "नयना हम को यह साफ साफ बताओ कि नरेश की देहांत कब और कैसे हुई थी।"

"सब को यह मालूम है कि नरेश और मैं पर्वतारोहित थे और अपने फालतू समय मे ऊँचे पहाड़ो पर चढा करते थे। हमारे एक ऐसे ही *बुलू माउनटन* के सफर मे नरेश के पैर फिसल गये थे और वह नीचे गिरा था जहां उस का सर एक बड़े पत्थर मे जा लगा था। वह बेहोश जरूर हो गया था पर उस समय उस के सर से कोई खून नहीं निकला था। थोड़ी देर मे वह ठीक हो गया था और हम पहाड़ पर चढ़ते रहे।"

नयना थोड़े देर रुक कर फिर कहना शुरु किया, "कुछ समय के बाद उस के सर मे अचानक दर्द होने लगे थे और हम वही ठहर कर सुसताने लगे थे। नरेश का सर दर्द बढ़ता ही गया और वह आउरबाउर बकने लगा था। इस के बाद वह बेहोश हो गया और मेरे बांहों मे अपना दम तोड़ दिया। उस के शव के परीक्षा के बाद यह पता चला था कि उस के दिमाग के अंदर बहुत बड़ा रक्तप्रवाह हुआ था जिस को तुरन्त रोकने की जरूरत थी पर हम उन ऊँचे पहाड़ों पर ऐसा नहीं कर सके थे।" नयना ने शलेन्द हो समझाने की कोशिश किया।

“इस का मतलब यह हुआ कि नरेश को अचानक बहुत खून बहने की बिमारी थी और उसे कई बार अस्पताल मे खून भी चढ़ाया गया होगा।” जब शलेन्द ने यह पूछा तब नयना ने स्पस्ट किया कि कई बार उस के मौत से पहले नरेश के साथ ऐसा हुआ था।

“नयना, अब यह साफ जाहिर है कि किसी ने भी नरेश को *हैच आई वी* दे दी होगी और उस ने अनजाने मे तुम्हारे खून मे इस का संचार कर दिया होगा। अब तो यह बहुत ही जरूरी हो गया है कि तुम को जल्द से जल्द डाक्टर गिलेसपी के चिकित्सालय मे जाना चाहिये जिस से इस संसय का समाधान मिल सके।” शलेन्द ने नयना को समझाया।

इस के बाद नयना वहीं बैठी सिसिकती रही और डाक्टर शलेन्द ने डाक्टर गिलेसपी से नयना को अपने चिकित्सालय मे दाखिल करने का समय दूसरे हफते निर्धारित किया। नयना ने अपने आप मे हिम्मत बन्धाते हुये रोशनी को लेने चल पड़ी। उस ने अपने मन मे यह तय कर लिया था कि वह किसी भी हालत मे अपने बिमारी की खबर रोशनी को अभी नहीं देगी। लेकिन समय आने पर उसे यह दारूण खबर को रोशनी को देना ही होगा।

अब हर रात नयना के लिये बहुत ही लम्बी लगने लगी थी पर हर रोज नया सबेरा होने को कोई कैसे रोक सकता है। सुबह होती तो नयना की बेटी रोशनी जाग कर अपनी तैयारी करने मे लग जाती थी। वह बारह वर्ष की कन्या अपने उमर के मुताबिक समय और परिस्थितियों के कारण बहुत ही जिम्मेदार बच्ची हो गई थी। इसी लिये नयना को अपने बेटी पर बहुत नाज़ था। अब हर रोज रोशनी अपने बस पकड़ कर स्कूल चली जाया करती थी तब नयना अपने दुकान पर जाती थी। हर शाम को घर लौटते समय वह रोशनी को अपने साथ ले आती थी। इस तरह मां बेटी मे आपसी समझ बूझ भी बढ़ने लगी थी।

धीरे धीरे एक सप्ताह भी बीत गया और कल सुबह नयना डाक्टर गिलेसपी के सेजरी जाने की तैयारी करने लगी। उस के दुकान को देखभाल करने के लिये अब एक नई क्रमचारी भी मिल गई थी जो साधारण तौर पर व्यापार की संचालन करने को राजी हुई थी जब तक उन को कोई खरीदने वाला ग्राहक न मिल जाता। नीलमा एक बहुत ही नेक और समझदार युवती थी जिस पर नयना पूरे तौर से भरोसा करती थी।

उस रात को नयना को अपने बेटी को अपने बिमारी के बारे मे बताना था पर वह ऐसा कैसे करे वह इस के बारे

मे सोच ही रही थी । कुछ भी हो छिपाने से तो बात नहीं बन सकती थी इसलिये सब साफ साफ बताना जरूरी था । पर कैसे ?

जब नरेश की मृत्यु हुई थी तब उस दुखित समाचार को सुन कर रोशनी ने बहुत ही नराज़गी दिखाया था । महीनो लग गये थे रोशनी को नयना को माफ करने के लिये । रोशनी अपने मां को नरेश के मौत के लिये जिम्मेदार समझने लगी थी । उस समय हर रात जब नयना रोशनी को सुला कर अपने कमरे मे जाती थी तब वह अपने बच्ची के आंखौं मे एक अजीब सी नफरत को महसूस करती थी । वह जैसे कह रही थी कि *तुम ने ही मेरे पिता को घर से ले गई थी पर उन की लाश को वापस लाई थी* ।

कई हफतो के एक मशहूर मनोचिकित्सक के सेवा और मदद से रोशनी के उस नराज़गी और नयना के प्रति घृणा को वे शान्त कर सके थे । पर अभी भी जब रोशनी को पुराने दिन याद आते थे तो वह नयना पर बरस पड़ती थी ।

'मम तुम्हारे ही कारण मैं आज अपने डेडी को न तो प्यार कर सकती हूँ, न चूम सकती हूँ और न ही वे हम को दुलार कर सकते हैं । आज जो डेडी होते तो वे हमे अपने

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below